के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2019 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–2I

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक – 20 जून, 2019

जून, 2019 को समाप्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 20.06.2019 को आयोजित की गई। उपस्थित सदस्यों के साथ सामूहिक चर्चा के दौरान राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन, तिमाही प्रगति रिपोर्ट में किए जाने वाले आंकड़ों के समुचित रिकार्ड रखे जाने, विभागीय प्रोत्साहन योजनाओं के कार्यान्वयन, समस्त स्टाफ को हिंदी में कार्य करने के लिए सहायक सामग्री वितरित करने तथा बनाए गए मानक पत्रों व मसौदों के प्रारूप के प्रयोग को सुनिश्चित करने पर बल दिया गया। इस बैठक में समिति के अध्यक्ष महोदय द्वारा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लिए समयबद्ध कार्यक्रम बनाने का निर्देश भी दिया। उन्होंने अलग–अलग प्रभागों के प्रभारी से हिन्दी प्रगति की जानकारी प्राप्त की। इस बैठक में समिति के समस्त सदस्यों ने सहभागिता की।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान विचार विमर्श

स्वच्छता पखवाड़ा 16 – 31 मई, 2019 के दौरान 'निबंध प्रतियोगिता' तथा 'स्लोगन/सुझाव प्रतियोगिता' का आयोजन

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में स्वच्छता पखवाड़ा 2019 – दिनांक 16 मई से 31 मई, 2019 का आयोजन किया गया। स्वच्छता पखवाड़ा के अनुपालन के लिए 'स्वच्छता का महत्व' विषय पर निबंध तथा स्लोगन/कार्यस्थल को स्वच्छ रखने के सुझाव से संबंधित प्रविष्टियां आमंत्रित की गई। 'स्वच्छता का महत्व' विषय पर निबंध प्रतियोगिता दिनांक 27 मई, 2019 को आयोजित की गई। इसके अलावा इच्छुक स्टाफ सदस्यों ने स्लोगन/कार्यस्थल को स्वच्छ रखने के सुझाव से संबंधित अपनी प्रविष्टियां भी प्रेषित की। श्रेष्ठ तीन निबंधों एवं तीन स्लोगनों/सुझावों को पुरस्कृत किया गया।

'निबंध प्रतियोगिता' तथा 'स्लोगन/सुझाव प्रतियोगिता' : कुछ झलकियां

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2019 केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग खण्ड–I अंक–2I

30 अप्रैल, 2019 श्री टी. राउत, प्रमुख (विधि) की सेवानिवृत्ति

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में श्री टी. राउत, प्रमुख (विधि) के सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्ष महोदय ने श्री टी. राउत की कार्यशैली और उनके महत्वपूर्ण योगदान की प्रशंसा की। आयोग के सदस्य डॉ. एम. के.अय्यर एवं श्री इन्दुशेखर झा ने उनके अथक परिश्रम की सराहना की व उनके सेवानिवृत्त जीवन के लिए मंगल कामना की। विदाई समारोह में सभी स्तर के स्टाफ सदस्यों ने उनके साथ अपनी स्मृतियों को साझा किया। श्री टी.राउत ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए और आयोग में अपने कार्यकाल की स्मृतियों को ताजा किया व सभी को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. राजेन्द्र प्रताप सहगल, राजभाषा अधिकारी द्वारा किया गया।

श्री टी. राउत, प्रमुख (विधि) को भावभीनी विदाई : कुछ झलकियां

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2019 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–2I

''नींव''

(कविता का अनुवादित रूप)

मैं अध्यापक हूं
मुझे पता है कि मेरी कोई शोभा नहीं है
शोभा तो गुम्बद और महलों की होती है
मैं तो एक नींव हूं
नींव तो छुपी रहती है, नजर नहीं आती
पर नींव है तो महल है, नींव है तो गुम्बद है
मुझे पता है कि मेरा कोई वजूद नहीं है
वजूद तो फल का होता है, वजूद तो पेड़ो का होता है
पर मैं तो बीज हूं
पर बीज है तो पेड़ा है, बीज है तो फल है
मुझे पता है कि मेरी कोई चर्चा नहीं होती,
किसी कि जुबां से नहीं, किसी की बातों में नहीं
चर्चा तो दीये की होती है, चर्चा तो प्रकाश की होती है
मैं तो दीये की जोत हूं
पर जोत है तो दीया है, जीत है तो प्रकाश है
मुझे पता है की मैं किसी का प्यार नहीं,
प्यार तो मीठी बातों का होता है
मुझे तो झिझकना भी पड़ता है
पर हां, झिझक है तो कोई वकील बना,
झिझक है तो कोई डॉक्टर बना
झिझक है तो कोई इंजीनियर बना
मुझे पता है बहुत मेरा सम्मान नहीं करते
सम्मान तो अफसरों का होता है, फौजीयों का होता है
सम्मान तो डॉक्टर का होता है
पर मैं तो अध्यापक हूं
पर हां अध्यापक है तो डॉक्टर है
अध्यापक है तो अफसर है
कोई मेरा सम्मान करे या ना करे
पर मुझे अपने पर मान है क्योंकि
..... मैं नींव हूं
..... मैं बीज हूं
..... मैं मीठी झिझक हूं
..... जोत हूं
..... जी आप सही हैं, मैं एक अध्यापक हूं

श्री अरविंदर सिंह
प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)

''वो तेरा ही तो साहस था...।''

क्यूँ उठ रहा विश्वास स्वयम् से,
क्यूँ विक्षिप्त हो रहा तू मन से,
क्यूँ भूल गया जो पाया अब तक,
वो तेरा ही तो साहस था...।
सफ़ल हो चाहे विफ़ल तू,
ये तो बात समय की है,
पर धैर्यपूर्ण जो तू चला,
वो तेरा ही तो साहस था...।
कितनी ही बार तू लड़खड़ाया,
कितनी ही बार तू गिरा,
पर उठ संभल जो तू चला,
वो तेरा ही तो साहस था...।
कई बार उम्मीदें बाँधीं,
भटकते मन की नाव साधी,
जो बिखरे तिनकों को फिर से जोड़ा,
वो तेरा ही तो साहस था...।
जब मन–भवन में आशादीप बुझ जाए,
तब अंतर्मन में केवल यही बात आए,
जो आशादीप जलाए अब तक,
वो तेरा ही तो साहस था...।

(मनजीत सिंह)
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

के वि वि आयोग
CERC

सोदामिनी

अप्रैल – जून, 2019 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–2I

स्वच्छता का महत्व

निबंध

स्वच्छ रखो घर आंगन, स्वच्छ रखो परिवेश।
स्वच्छता में चमक उठेगा, जग में अपना देश।।

स्वच्छता एक ऐसा शब्द है जिसका सरोकार हम सभी प्राणियों से है। स्वच्छता का भाव तथा अभाव हम सभी मनुष्य जानवर, जीव जन्तु आदि अनुभव करते हैं। उदाहरण के लिए यदि वायु दूषित हो तो मनुष्य श्वास नहीं ले पाते, यदि जल दूषित हो तो जल प्राणि अपना जीवन एक कठिन परिस्थिति में व्यतीत करते हैं। ऐसे कई परिपेक्ष हैं जिनमें स्वच्छता का महत्व एक सरल भाषा में महसूस किया जा सकता है।

भारतवर्ष एक आस्था तथा देवी देवताओं की आराधना और उनका सम्मान करने वाला देश है। अंग्रेजी में भी एक कहावत है – स्वच्छता भगवान की आराधना की तरह है। यदि परिवेश स्वच्छ ना हो तो देवता भी उसमें वास नहीं करते। परन्तु जानकारी होने के बावजूद भी भारतवासी स्वच्छता को अपनी जरूरत नहीं समझते। इसका सबसे बड़ा कारण है अज्ञानता। भारत खुले में शौच करने वालों की जनसंख्या वाला सबसे प्रथम देश है। यहां की आबादी का लगभग 61 प्रतिशत भाग 2014 तक खुले में शौच करता था। बच्चों की मृत्यु दर विश्व की औसतन दर से कई गुना ऊँची थी। ऐसे कई विश्लेषण आपको मिल जाएंगे जिनमें भारत का स्तर विश्व के मुकाबले स्वच्छता आंकड़ों में पिछड़ा हुआ है।

आधुनिक भारत में स्वच्छता के अभाव को, प्रथमतः महात्मा गांधी ने पहचाना था। उन्होंने 1901 के कांग्रेस अधिवेशन के दौरान यह देखा कि शौचालयों की साफ सफाई का कार्य कांग्रेस कार्यकर्ता नहीं बल्कि मैला ढोने वाले करते थे। उन्होंने इसका विरोध किया तथा दक्षिण अफ्रीका जाने के बाद फिनिक्स आश्रम में स्वच्छता का प्रचार किया तथा सभी लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाया।

भारत वापस आने के बाद गांधी जी ने वर्धा 1937 के सम्मेलन के दौरान विद्यालयों में स्वच्छता के महत्व को बच्चों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने का संदेश दिया। उनका मानना था कि आने वाला भविष्य ही एक सुदृढ़ भारत की नींव रख सकता है।

स्वच्छता किसी भी देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक प्रगति में बहुमूल्य योगदान देती है। स्वच्छता के प्रसार से अपनी आर्थिक प्रगति दर यानि जीडीपी का 6 प्रतिशत बढ़ा सकते हैं। एक देश को स्वच्छता का महत्व दूसरे देशों से पर्यटक आकर्षित करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

स्वच्छता का महत्व कई रूपों में बताया जा सकता है, जैसे कि :–

सामाजिक महत्व और लाभ

1. देश की महिलाओं को खुले में शौच से मुक्ति। इससे समाज में उन्हें सम्मान तथा उनके स्वास्थ्य का अधिकार मिलता है। एक स्वच्छ गृहणी ही अपने परिवार में स्व्च्छता का महत्व समझा सकती है।
2. बच्चे देश का भविष्य होते हैं। दूषित पर्यावरण तथा स्वच्छता के अभाव के कारण उनका शारीरिक तथा बौद्धिक विकास नहीं हो पाता। बच्चों की मृत्यु दर अभी भी भारत में विश्व की औसत दर से अधिक है। उनका स्वास्थ्य, स्वच्छता से सुधारा जा सकता है तथा उनके विकास के कारण वह देश के विकास में आगे जाकर योगदान कर सकते हैं।
3. भारत में नदियों को देवी समान पूजा जाता है। उन्हें स्वच्छ रखना हमारा कर्तव्य है। यह जीवनदायिनी नदियां ही स्वच्छ जल का स्रोत है।
4. अपने घर और परिवेश में स्वच्छता रखने से बीमारियों से बचाव मुमकिन है।
5. स्वच्छता से आयु का विकास होता है तथा अपनी रोगों से लड़ने की क्षमता में इजाफा होता है।
6. पेड़ पौधों को उगाने से मिट्टी के रिसाव की रोकथाम होती है तथा वे वर्षा लाने में लाभदायक होते हैं। जल को स्वच्छ रखने से जल प्राणी सुरक्षित रहते हैं।

आर्थिक लाभ

1. मृत्यु दर कम होने से बीमारी की रोकथाम में सरकारी खर्च कम होता है।
2. किसी भी देश की पर्यावरण संबंधी समस्याओं में कमी होती है।
3. विश्व बैंक के अध्ययन के अनुसार आर्थिक वृद्धि दर में इजाफा होता है।
4. यूनिसेफ के अनुसार स्वच्छता में किया गया खर्च 10 साल में 4.7 गुना अधिक लाभ देता है।

अंकित गुप्ता
अनुसंधान सहयोगी
विनियामक मामले

संरक्षक
इंदु शेखर झा
सदस्य

संपादक मंडल
सनोज कुमार झा, सचिव
सचिन कुमार, सहायक सचिव (का.एवं.प्र.)
राजेन्द्र सहगल, राजभाषा अधिकारी

कृपया इस पते पर अपनी प्रतिक्रिया भेजें :
केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
भूतल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ,
नई दिल्ली–110001
Email : info@cercind.gov.in

www.cercind.gov.in